

Para 22

Sipara 22 of 30 · 169 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Ahzaab

31

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا ۖ نُؤْتَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا ۖ كَرِيمًا ۖ

और तुममें से जो (बीवी) खुदा और उसके रसूल की ताबेदारी अच्छे (अच्छे) काम करेगी उसको हम उसका सवाब भी दोहरा अता करेंगे और हमने उसके लिए (जन्नत में) इज्जत की रोजी तैयार कर रखी है

32

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ ۖ مِنَ النِّسَاءِ ۖ إِنَّ أَتَقَيْنَنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ ۖ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۖ

ऐ नबी की बीवियों तुम और मामूली औरतों की सी तो हो वही (बस) अगर तुम को परहेज़गारी मंज़ूर रहे तो (अजनबी आदमी से) बात करने में नरम नरम (लगी लिपटी) बात न करो ताकि जिसके दिल में (शहवते ज़िना का) मर्ज़ है वह (कुछ और) इरादा (न) करे

33

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى ۖ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۖ

और (साफ-साफ) उनवाने शाइस्ता से बात किया करो और अपने घरों में निचली बैठी रहो और अगले ज़माने जाहिलियत की तरह अपना बनाव सिंगार न दिखाती फिरो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और (बराबर) ज़कात दिया करो और खुदा और उसके रसूल की इताअत करो ऐ (पैग़म्बर के) अहले बैत खुदा तो बस ये चाहता है कि तुमको (हर तरह की) बुराई से दूर रखे और जो पाक व पाकीज़ा दिखने का हक़ है वैसा पाक व पाकीज़ा रखे

وَأَذْكُرَنَّ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ ءَايَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا

और (ऐ नबी की बीबियों) तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें और (अक़ल व हिकमत की बातें) पढ़ी जाती हैं उनको याद रखो कि बेशक खुदा बड़ा बारीक है वाकिफ़कार है

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِينَ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَشِيعِينَ وَالْخَشِيعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَفِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَفِظَاتِ وَالذَّكِرِينَ اللَّهُ كَثِيرًا ۚ وَالذِّكْرُ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً ۚ وَأَجْرًا عَظِيمًا ۚ

(दिल लगा के सुनो) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें और फरमाबरदार मर्द और फरमाबरदार औरतें और रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब करने वाले मर्द और सब करने वाली औरतें और फिरौतनी करने वाले मर्द और फिरौतनी करने वाली औरतें और ँरात करने वाले मर्द और ँरात करने वाली औरतें और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले मर्द और हिफाज़त करने वाली औरतें और खुदा की बकसरत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें बेशक इन सब लोगों के वास्ते खुदा ने मग़फ़िरत और (बड़ा) सवाब मुहैया कर रखा है

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ ۙ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَىٰ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۙ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۙ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا ۚ وَمَنْ يُبِذْ ۙ

और न किसी ईमानदार मर्द को ये मुनासिब है और न किसी ईमानदार औरत को जब खुदा और उसके रसूल किसी काम का हुक्म दें तो उनको अपने उस काम (के करने न करने) अख़तेयार हो और (याद रहे कि) जिस शख्स ने खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की वह यक़ीनन खुल्लम खुल्ला गुमराही में मुब्तिला हो चुका

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ
وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۚ فَلَمَّا
قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا ۚ زَوَّجْنَاهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ ۚ فِي زَوْجِ
أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا ۚ مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ ۝ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम उस शख्स (जैद) से कह रहे थे जिस पर खुदा ने एहसान (अलग) किया था और तुमने उस पर (अलग) एहसान किया था कि अपनी बीबी (जैनब) को अपनी ज़ौज़ियत में रहने दे और खुदा से डेर खुद तुम इस बात को अपने दिल में छिपाते थे जिसको (आखिरकार) खुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे हालाँकि खुदा इसका ज्यादा हक़दार है कि तुम उस से डरो गरज़ जब जैद अपनी हाज़त पूरी कर चुका (तलाक़ दे दी) तो हमने (हुक़्म देकर) उस औरत (जैनब) का निकाह तुमसे कर दिया ताकि आम मोमिनीन को अपने ले पालक लड़कों की बीवियों (से निकाह करने) में जब वह अपना मतलब उन औरतों से पूरा कर चुकें (तलाक़ दे दें) किसी तरह की तंगी न रहे और खुदा का हुक़्म तो किया कराया हुआ (क़तई) होता है

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ ۚ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۚ ۝ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا ۚ
مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا ۚ ۝ مَّقْدُورًا

जो हुक़्म खुदा ने पैग़म्बर पर फर्ज कर दिया (उसके करने) में उस पर कोई मुज़ाएफ़ा नहीं जो लोग (उनसे) पहले गुज़र चुके हैं उनके बारे में भी खुदा का (यही) दस्तूर (जारी) रहा है (कि निकाह में तंगी न की) और खुदा का हुक़्म तो (ठीक अन्दाज़े से) मुक़रर हुआ होता है

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ ۚ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
حَسِيبًا ۝

वह लोग जो खुदा के पैग़ामों को (लोगों तक जूँ का तूँ) पहुँचाते थे और उससे डरते थे और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे (फिर तुम क्यों डरते हो) और हिसाब लेने के वास्ते तो खुद काफ़ी है

40

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝۱

(लोगों) मोहम्मद तुम्हारे मर्दों में से (हकीकतन) किसी के बाप नहीं हैं (फिर जैद की बीवी क्यों हराम होने लगी) बल्कि अल्लाह के रसूल और नबियों की मोहर (यानी खत्म करने वाले) हैं और खुदा तो हर चीज़ से खूब वाकिफ है

41

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ اذْكُرُوا ۚ اللَّهَ ذِكْرًا ۚ كَثِيرًا ۝۱

ऐ ईमानवालों बाकसरत खुदा की याद किया करो और

42

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً ۙ وَأَصِيلًا ۝۱

सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो

43

هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝۱

वह वही तो है जो खुद तुमपर दूरूद (दर्दों रहमत) भेजता है और उसके फ़रिश्ते ताकि तुमको (कुफ़्र की) तारीकियों से निकालकर (ईमान की) रौशनी में ले जाए और खुदा ईमानवालों पर बड़ा मेहरबान है

44

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ ۖ سَلَامٌ ۚ ۝۱ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا ۚ كَرِيمًا ۝۱

जिस दिन उसकी बारगाह में हाज़िर होंगे (उस दिन) उनकी मुरादात (उसकी तरफ से हर किस्म की) सलामती होगी और खुदा ने तो उनके वास्ते बहुत अच्छा बदला (बेहश्त) तैयार रखा है

45

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَهِدًا ۝۱ وَمُبَشِّرًا ۝۱ وَنَذِيرًا ۝۱

ऐ नबी हमने तुमको (लोगों का) गवाह और (नेकों को बेहश्त की) खुशखबरी देने वाला और बदों को अज़ाब से डराने वाला

46

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِآذَنِهِ ۙ وَسِرَاجًا ۝۱ مُنِيرًا ۝۱

और खुदा की तरफ उसी के हुक्म से बुलाने वाला और (ईमान व हिदायत का) रौशन चिराग़ बनाकर भेजा

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا ۖ كَبِيرًا ۝۱

और तुम मोमिनीन को खुशखबरी दे दो कि उनके लिए खुदा की तरफ से बहुत बड़ी (मेहरबानी और) बख्शिशा है

وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذُنَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝۲

और (ऐ रसूल) तुम (कहीं) काफिरों और मुनाफिकों की इताअत न करना और उनकी ईज़ारसानी का ख्याल छोड़ दो और खुदा पर भरोसा रखो और कारसाज़ी में खुदा काफ़ी है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ ۖ تَعْتَدُونَهَا ۖ فَمَتَّعُوهُنَّ وَسَرَحُوهُنَّ سَرَاحًا ۖ جَمِيلًا ۝۳

ऐ ईमानवालों जब तुम मोमिना औरतों से (बग़ैर मेहर मुक़र्रर किये) निकाह करो उसके बाद उन्हें अपने हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो फिर तुमको उनपर कोई हक़ नहीं कि (उनसे) इद्दा पूरा कराओ उनको तो कुछ (कपड़े रुपये वग़ैरह) देकर उनवाने शाइस्ता से रुख़सत कर दो

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي ءَاتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عِمَّتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً ۖ مُؤْمِنَةً إِن وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً ۖ لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۖ ۝۴ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۖ رَحِيمًا ۝۵

ऐ नबी हमने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी उन बीवियों को हलाल कर दिया है जिनको तुम मेहर दे चुके हो और तुम्हारी उन लौंडियों को (भी) जो खुदा ने तुमको (बग़ैर लड़े-भिड़े) माले इनीमत में अता की है और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी खालाओं की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आयी हैं (हलाल कर दी और हर ईमानवाली औरत (भी) हलाल कर दी) अगर वह अपने को (बग़ैर मेहर) नबी को दे दें और नबी भी उससे निकाह करना चाहते हों मगर (ऐ रसूल) ये हुक्म सिर्फ तुम्हारे वास्ते खास है और मोमिनीन के लिए नहीं और हमने जो कुछ (मेहर या क्रीमत) आम मोमिनीन पर उनकी बीवियों और उनकी लौंडियों के बारे में मुक़र्रर कर दिया है हम खूब जानते हैं और (तुम्हारी रियायत इसलिए है) ताकि तुमको (बीवियों की तरफ से) कोई दिक्कत न हो और खुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है

﴿ تَرْجَى مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ﴾ ﴿ وَمَنْ أَبْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ﴾ ﴿ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقْرَأَ عَيْنُهَا وَلَا يَحْزَنَ ۚ وَيَرْضَيْنَ بِمَا ءَاتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ﴾ ﴿ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ﴾ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴾ ۱

इनमें से जिसको (जब) चाहो अलग कर दो और जिसको (जब तक) चाहो अपने पास रखो और जिन औरतों को तुमने अलग कर दिया था अगर फिर तुम उनके स्वाहाँ हो तो भी तुम पर कोई मज़ाएक़ा नहीं है ये (अख़तेयार जो तुमको दिया गया है) ज़रूर इस क़ाबिल है कि तुम्हारी बीवियों की आँखें ठन्डी रहे और आर्जूदा ख़ातिर न हो और वो कुछ तुम उन्हें दे दो सबकी सब उस पर राज़ी रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है खुदा उसको खुब जानता है और खुदा तो बड़ा वाक्फ़िक़ार बुर्दबार है

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ ۚ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۚ ۱

(ऐ रसूल) अब उन (नौ) के बाद (और) औरतें तुम्हारे वास्ते हलाल नहीं और न ये जायज़ है कि उनके बदले उनमें से किसी को छोड़कर और बीबियाँ कर लो अगर चे तुमको उनका हुस्न कैसा ही भला (क्यों न) मालूम हो मगर तुम्हारी लौडियाँ (इस के बाद भी जायज़ हैं) और खुदा तो हर चीज़ का निगराँ है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَدْخُلُوا ۚ بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرٍ
نَظَرِينَ إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا ۚ فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا ۚ وَلَا مُسْتَنْسِينَ
لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِ ۚ مِنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِ ۚ مِنْ
الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا ۚ فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ۚ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ
لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا ۚ رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا
أَزْوَاجَهُ ۚ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا

ऐ ईमानदारों तुम लोग पैगम्बर के घरों में न जाया करो मगर जब तुमको खाने के वास्ते (अन्दर आने की) इजाजत दी जाए (लेकिन) उसके पकने का इन्तेज़ार (नबी के घर बैठकर) न करो मगर जब तुमको बुलाया जाए तो (ठीक वक्त पर) जाओ और फिर जब खा चुको तो (फौरन अपनी अपनी जगह) चले जाया करो और बातों में न लग जाया करो क्योंकि इससे पैगम्बर को अज़ीयत होती है तो वह तुम्हारा लैहाज़ करते हैं और खुदा तो ठीक (ठीक कहने) से झेंपता नहीं और जब पैगम्बर की बीबियों से कुछ माँगना हो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो यही तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के वास्ते बहुत सफाई की बात है और तुम्हारे वास्ते ये जायज़ नहीं कि रसूले खुदा को (किसी तरह) अज़ीयत दो और न ये जायज़ है कि तुम उसके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो बेशक ये खुदा के नज़दीक बड़ा (गुनाह) है

إِنْ تُبْدُوا ۚ شَيْئًا أَوْ تَخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۚ

चाहे किसी चीज़ को तुम ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ खुदा तो (बहरहाल) हर चीज़ से यकीनी खूब आगाह है

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي ءَابَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ
أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمُنُهُنَّ ۚ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدًا

औरतों पर न अपने बाप दादाओं (के सामने होने) में कुछ गुनाह है और न अपने बेटों के और न अपने भाईयों के और न अपने भतीजों के और अपने भांजों के और न अपनी (क्रिस्म कि) औरतों के और न अपनी लौंडियों के सामने होने में कुछ गुनाह है (ऐ पैगम्बर की बीबियों) तुम लोग खुदा से डरती रहो इसमें कोई शक ही नहीं की खुदा (तुम्हारे आमाल में) हर चीज़ से वाकिफ़ है

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ ۖ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ صَلُّوا ۙ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا ۙ تَسْلِيمًا

इसमें भी शक नहीं कि खुदा और उसके फरिश्ते पैग़म्बर (और उनकी आल) पर दुरूद भेजते हैं तो ऐ ईमानदारों तुम भी दुरूद भेजते रहो और बराबर सलाम करते रहो

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْءَاخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا ۖ مُّهِينًا ۖ

बेशक जो लोग खुदा को और उसके रसूल को अज़ीयत देते हैं उन पर खुदा ने दुनिया और आखेरत (दोनों) में लानत की है और उनके लिए रूसवाई का अज़ाब तैयार कर रखा है

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا ۚ فَقَدِ احْتَمَلُوا ۙ بُهْتَنًا ۙ وَإِثْمًا ۙ مُّبِينًا ۖ

और जो लोग ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतों को बगैर कुछ किए द्वारे (तोहमत देकर) अज़ीयत देते हैं तो वह एक बोहतान और सरीह गुनाह का बोझ (अपनी गर्दन पर) उठाते हैं

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ ۚ قُلْ لَا زَوْجَكَ وَبَنَاتِكَ ۚ وَنِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ ۖ مِنْ جَلْبِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ ۖ أَنْ يُعْرَفْنَ ۖ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۖ رَحِيمًا ۖ

ऐ नबी अपनी बीवियों और अपनी लड़कियों और मोमिनीन की औरतों से कह दो कि (बाहर निकलते वक्त) अपने (चेहरों और गर्दनों) पर अपनी चादरों का धूँघट लटका लिया करें ये उनकी (शराफ़त की) पहचान के वास्ते बहुत मुनासिब है तो उन्हें कोई छेड़ेगा नहीं और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

60

لَّئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ
لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۖ۱

ऐ रसूल मुनाफेकीन और वह लोग जिनके दिलों में (कुफ्र का) मर्ज है और जो लोग मदीने में बुरी खबरें उड़ाया करते हैं- अगर ये लोग (अपनी शरारतों से) बाज्र न आएंगे तो हम तुम ही को (एक न एक दिन) उन पर मुसल्लत कर देंगे फिर वह तुम्हारे पड़ोस में चन्द रोज़ों के सिवा ठहरने (ही) न पाएँगे

61

مَلْعُونِينَ ۖ أَيُّنَمَا تُقْفُوا ۖ أَخْذُوا ۖ وَقُتِلُوا ۖ تَقْتِيلًا ۖ۱

लानत के मारे जहाँ कहीं हत्थे चढ़े पकड़े गए और फिर बुरी तरह मार डाले गए

62

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا ۖ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ۱

जो लोग पहले गुज़र गए उनके बारे में (भी) खुदा की (यही) आदत (जारी) रही और तुम खुदा की आदत में हरगिज़ तग़ाय्युर तबद्दुल न पाओगे

63

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
تَكُونُ قَرِيبًا

(ऐ रसूल) लोग तुमसे क़यामत के बारे में पूछा करते हैं (तुम उनसे) कह दो कि उसका इल्म तो बस खुदा को है और तुम क्या जानो शायद क़यामत करीब ही हो

64

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا

खुदा ने क़ाफ़िरों पर यकीनन लानत की है और उनके लिए जहन्नुम को तैयार कर रखा है

65

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا ۖ وَلَا نَصِيرًا ۖ۱

जिसमें वह हमेशा अबदल आबाद रहेंगे न किसी को अपना सरपरस्त पाएँगे न मददगार

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝

जिस दिन उनके मुँह जहन्नुम की तरफ फेर दिए जाएँगे तो उस दिन अफ़सोसनाक लहजे में कहेंगे ऐ काश हमने खुदा की इताअत की होती और रसूल का कहना माना होता

وَقَالُوا ۝ رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَ ۝

और कहेंगे कि परवरदिगारहमने अपने सरदारों अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने ही ने हमें गुमराह कर दिया

رَبَّنَا ءَاتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ لَعْنٌ ۝ كَبِيرٌ ۝

परवरदिगारा (हम पर तो अज़ाब सही है मगर) उन लोगों पर दोहरा अज़ाब नाज़िल कर और उन पर बड़ी से बड़ी लानत कर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ لَا تَكُونُوا ۝ كَالَّذِينَ ءَادُوا ۝ مُوسَىٰ فَبَرَأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۝ ۝ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهٌ ۝

ऐ ईमानवालों (ख़बरदार कहीं) तुम लोग भी उनके से न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ दी तो खुदा ने उनकी तोहमतों से मूसा को बरी कर दिया और मूसा खुदा के नज़दीक एक रवादार (इज्जत करने वाले) (पैग़म्बर) थे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ اتَّقُوا ۝ اللَّهَ وَقُولُوا ۝ قَوْلًا ۝ سَدِيدٌ ۝

ऐ ईमानवालों खुदा से डरते रहो और (जब कहो तो) दुरूस्त बात कहा करो

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۝ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا

तो खुदा तुम्हारी कारगुज़ारियों को दुरूस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जिस शख्स ने खुदा और उसके रसूल की इताअत की वह तो अपनी मुराद को खूब अच्छी तरह पहुँच गया

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ ظَلُومًا ۚ جَهُولًا ۚ

बेशक हमने (रोज़े अज़ल) अपनी अमानत (इताअत इबादत) को सारे आसमान और ज़मीन पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसके (बार) उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए और आदमी ने उसे (बे ताम्मुल) उठा लिया बेशक इन्सान (अपने हक़ में) बड़ा ज़ालिम (और) नादान है

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۚ رَحِيمًا ۚ

इसका नतीजा यह हुआ कि खुदा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को (उनके किए की) सज़ा देगा और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों की (तक़सीर अमानत की) तौबा कुबूल फरमाएगा और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

Saba

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ ۚ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي آخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ

हर किस्म की तारीफ़ उसी खुदा के लिए (दुनिया में भी) सज़ावार है कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है और आख़ेरत में (भी हर तरफ़) उसी की तारीफ़ है और वही वाक़िफ़कार हकीम है

يَعْلَمُ مَا يَلْجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ

(जो) चीज़ें (बीज वग़ैरह) ज़मीन में दाख़िल हुई है और जो चीज़ (दरख़्त वग़ैरह) इसमें से निकलती है और जो चीज़ (पानी वग़ैरह) आसामन से नाज़िल होती है और जो चीज़ (नज़ारात फरिश्ते वग़ैरह) उस पर चढ़ती है (सब) को जानता है और वही बड़ा बख़्शने वाला है

3

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ ۚ لَا يُعْزِبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ ۚ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۚ

और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि हम पर तो क़यामत आएगी ही नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो हाँ (हाँ) मुझ को अपने उस आलेमुल ग़ैब परवरदिगार की क़सम है जिससे ज़रा बराबर (कोई चीज़) न आसमान में छिपी हुई है और न ज़मीन में कि क़यामत ज़रूर आएगी और ज़र्रे से छोटी चीज़ और ज़र्रे से बड़ी (गरज़ जितनी चीज़ें हैं सब) वाजेए व रौशन किताब लौहे महफूज़ में महफूज़ हैं

4

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُو۟لَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۚ

ताकि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और (अच्छे) काम किए उनको खुदा जज़ाए खैर दे यही वह लोग हैं जिनके लिए (गुनाहों की) मग़फ़ेरा और (बहुत ही) इज़्जत की रोज़ी है

5

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي ءَايَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُو۟لَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ ۚ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के तोड़) में मुक़ाबिले की दौड़-धूप की उन ही के लिए दर्दनाक अज़ाब की सज़ा होगी

6

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

और (ऐ रसूल) जिन लोगों को (हमारी बारगाह से) इल्म अता किया गया है वह जानते हैं कि जो (कुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है और सज़ावार हम्द (व सना) ग़ालिब (खुदा) की राह दिखाता है

7

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ ۚ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِقْتُمْ كُلٌّ مِّمَّزِقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ

और कुफ़्फ़ार (मसखरेपन से बाहम) कहते हैं कि कहो तो हम तुम्हें ऐसा आदमी (मोहम्मद) बता दें जो तुम से बयान करेगा कि जब तुम (मर कर सड़ ग़ल जाओगे और) बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो तुम यक़ीनन एक नए ज़िस्म में आओगे

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ ۚ جِنَّةٌ ۚ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ
وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ

क्या उस शख्स (मोहम्मद) ने खुदा पर झूठ तूफान बाँधा है या उसे जुनून (हो गया) है (न मोहम्मद झूठा है न उसे जुनून है)
बल्कि खुद वह लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते अज़ाब और पहले दर्जे की गुमराही में पड़े हुए हैं

أَفَلَمْ يَرَوْا ۚ إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نُخَسِفْ
بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطَ عَلَيْهِمْ كِسْفًا ۚ مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِن فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ لِّكُلِّ عَبْدٍ
مُّنِيبٍ ۚ

तो क्या उन लोगों ने आसमान और ज़मीन की तरफ भी जो उनके आगे और उनके पीछे (सब तरफ से घेरे) हैं गौर नहीं किया कि
अगर हम चाहे तो उन लोगों को ज़मीन में धँसा दें या उन पर आसमान का कोई टुकड़ा ही गिरा दें इसमें शक नहीं कि इसमें हर
रूजू करने वाले बन्दे के लिए यक़ीनी बड़ी इबरत है

ۚ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۚ ۚ يُجِبَالُ أَوَّيىٰ مَعَهُ ۚ وَالطَّيْرَ ۚ وَءَلْنَا لَهُ الْحَدِيدَ

और हमने यक़ीनन दाऊद को अपनी बारगाह से बुर्जुगी इनायत की थी (और पहाड़ों को हुक्म दिया) कि ऐ पहाड़ों तसबीह
करने में उनका साथ दो और परिन्द को (ताबेए कर दिया) और उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नरम कर दिया था

أَنۢ أَعْمَلَ سَبِغْتِ ۚ وَقَدَّرَ فِي السَّرْدِ ۚ وَأَعْمَلُوا ۚ صٰلِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۚ

कि फ़ैराख़ व कुशादा जिरह बनाओ और (कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़े का ख्याल रखो और तुम सब के सब अच्छे (अच्छे)
काम करो वो कुछ तुम लोग करते हो मैं यक़ीनन देख रहा हूँ

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ ۚ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَأَسَلْنَا لَهُ ۚ عَيْنَ الْقِطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنَّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ ۚ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ

और हवा को सुलेमान का (ताबेइदार बना दिया था) कि उसकी सुबह की रफ्तार एक महीने (मुसाफ़त) की थी और इसी तरह उसकी शाम की रफ्तार एक महीने (के मुसाफ़त) की थी और हमने उनके लिए तांबे (को पिघलाकर) उसका चश्मा जारी कर दिया था और जिन्नात (को उनका ताबेदार कर दिया था कि उन) में कुछ लोग उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके सामने काम काज करते थे और उनमें से जिसने हमारे हुक्म से इनहराफ़ किया है उसे हम (क्रियामत में) जहन्नुम के अज़ाब का मज़ा चखाएंगे

يَعْمَلُونَ لَهُ ۚ مَا يَشَاءُ مِنْ مَّحْرِبٍ وَتَمَثِيلٍ وَجِفَانٍ ۚ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ ۚ رَاسِيَتٍ ۚ أَعْمَلُوا ۚ ءَالَ دَاوُدَ ۚ دَ شُكْرًا ۚ ۚ وَقَلِيلٌ ۚ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ

गरज़ सुलेमान को जो बनवाना मंज़ूर होता ये जिन्नात उनके लिए बनाते थे (जैसे) मस्जिदें, महल, किले और (फरिश्ते अम्बिया की) तस्वीरें और हौज़ों के बराबर प्याले और (एक जगह) गड़ी हुई (बड़ी बड़ी) देगें (कि एक हज़ार आदमी का खाना पक सके) ऐ दाऊद की औलाद शुक्र करते रहो और मेरे बन्दों में से शुक्र करने वाले (बन्दे) थोड़े से हैं

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ ۚ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ ۚ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ أَنْ لَوْ كَانُوا ۚ يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا ۚ فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ

फिर जब हमने सुलेमान पर मौत का हुक्म जारी किया तो (मर गए) मगर लकड़ी के सहारे खड़े थे और जिन्नात को किसी ने उनके मरने का पता न बताया मगर ज़मीन की दीमक ने कि वह सुलेमान के असा को खा रही थी फिर (जब खोखला होकर टूट गया और) सुलेमान (की लाश) गिरी तो जिन्नात ने जाना कि अगर वह लोग ग़ैब वॉ (ग़ैब के जानने वाले) होते तो (इस) ज़लील करने वाली (काम करने की) मुसीबत में न मुब्तिला रहते

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ ۚ فِي مَسْكَنِهِمْ ءَايَةٌ ۚ ۚ جَنَّاتٍ عَنْ يَمِينٍ ۚ وَشِمَالٍ ۚ كُلُوا ۚ مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا ۚ لَهُ ۚ ۚ بَلَدَةٌ ۚ طَيِّبَةٌ ۚ وَرَبُّ غَفُورٌ ۚ

और (कौम) सबा के लिए तो यक़ीनन खुद उन्हीं के घरों में (कुदरते खुदा की) एक बड़ी निशानी थी कि उनके शहर के दोनों तरफ दाहिने बाएं (हरे-भरे) बागात थे (और उनको हुक्म था) कि अपने परवरदिगार की दी हुई रोज़ी आओ (पियो) और उसका शुक्र अदा करो (दुनिया में) ऐसा पाकीज़ा शहर और (आखेरत में) परवरदिगार सा बरूश्ने वाला

فَأَعْرَضُوا ۚ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَى أُكُلٍ خَمْطٍ ۚ وَأَثَلٍ ۚ وَشَيْءٍ ۚ مِّن سِدْرٍ ۚ قَلِيلٍ ۚ

इस पर भी उन लोगों ने मुँह फेर लिया (और पैगम्बरों का कहा न माना) तो हमने (एक ही बन्द तोड़कर) उन पर बड़े ज़ोरों का सैलाब भेज दिया और (उनको तबाह करके) उनके दोनों बाग़ों के बदले ऐसे दो बाग़ दिए जिनके फल बदमज़ा थे और उनमें झाऊ था और कुछ थोड़ी सी बेरियाँ थी

ذَلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۚ ۚ وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُورَ

ये हमने उनकी नाशुक्की की सज़ा दी और हम तो बड़े नाशुक्कों ही की सज़ा किया करते हैं

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بُرْكْنَا فِيهَا قُرًى ۚ ظُهْرَةً ۚ وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۚ سِيرُوا ۚ فِيهَا لَيَالٍ وَأَيَّامًا ءَامِنِينَ

और हम अहले सबा और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिनमें हमने बरकत अता की थी और चन्द बस्तियाँ (सरे राह) आबाद की थी जो बाहम नुमाया थीं और हमने उनमें आमद व रफ्त की राह मुक्करर की थी कि उनमें रातों को दिनों को (जब जी चाहे) बेखटके चलो फिरो

فَقَالُوا ۚ رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِّكُلِّ صَبَّارٍ ۚ شَكُورٍ ۚ

तो वह लोग खुद कहने लगे परवरदिगार (क़रीब के सफ़र में लुप्त नहीं) तो हमारे सफ़रों में दूरी पैदा कर दे और उन लोगों ने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया तो हमने भी उनको (तबाह करके उनके) अफसाने बना दिए - और उनकी धज्जियाँ उड़ा के उनको तितरि बितर कर दिया बेशक उनमें हर सब्र व शुक्र करने वालों के वास्ते बड़ी इब्रते हैं

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ ۚ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا ۚ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ

और शैतान ने अपने ख्याल को (जो उनके बारे में किया था) सच कर दिखाया तो उन लोगों ने उसकी पैरवी की मगर ईमानवालों का एक गिरोह (न भटका)

وَمَا كَانَ لَهُ[؟] عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ[؟] وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ[؟]

और शैतान का उन लोगों पर कुछ काबू तो था नहीं मगर ये (मतलब था) कि हम उन लोगों को जो आखेरत का यक्कीन रखते हैं उन लोगों से अलग देख लें जो उसके बारे में शक में (पड़े) हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हर चीज़ का निगारों है

قُلْ اَدْعُوا[؟] الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ[؟] لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ[؟] فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شَرْكَ[؟] وَمَا لَهُ[؟] مِنْهُمْ مِّنْ ظٰهِرٍ[؟]

(ऐ रसूल इनसे) कह दो कि जिन लोगों को तुम खुद खुदा के सिवा (माबूद) समझते हो पुकारो (तो मालूम हो जाएगा कि) वह लोग ज़र्रा बराबर न आसमानों में कुछ इखतेयार रखते हैं और न ज़मीन में और न उनकी उन दोनों में शिरकत है और न उनमें से कोई खुदा का (किसी चीज़ में) मदगार है

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَعَةُ عِنْدَهُ[؟] اِلَّا لِمَنْ اٰذَنَ لَهُ[؟][؟] حَتّٰى اِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا[؟] مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ[؟] قَالُوْا[؟] الْحَقُّ[؟] وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ

जिसके लिए वह खुद इजाज़त अता फ़रमाए उसके सिवा कोई सिफारिश उसकी बारगाह में काम न आएगी (उसके दरबार की हैबत) यहाँ तक (है) कि जब (शिफ़ाअत का) हुक्म होता है तो शिफ़ाअत करने वाले बेहोश हो जाते हैं फिर तब उनके दिलों की घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या हुक्म दिया

قُلْ مَن يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ[؟] قُلِ اللّٰهُ[؟] وَاِنَّا اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدٰى اَوْ فِي ضَلٰلٍ[؟] مُّبِيْنٍ[؟]

तो मुकर्रिब फरिश्ते कहते हैं कि जो वाजिबी था (ऐ रसूल) तुम (इनसे) पूछो तो कि भला तुमको सारे आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है (वह क्या कहेंगे) तुम खुद कह दो कि खुदा और मैं या तुम (दोनों में से एक तो) ज़रूर राहे रास्त पर है (और दूसरा गुमराह) या वह सरीही गुमराही में पड़ा है (और दूसरा राहे रास्त पर)

قُلْ لَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْئَلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो न हमारे गुनाहों की तुमसे पूछ गच्छ होगी और न तुम्हारी कारस्तानियों की हम से बाज़ पुर्स

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि हमारा परवरदिगार (क़यामत में) हम सबको इकट्ठा करेगा फिर हमारे दरमियान (ठीक) फैसला कर देगा और वह तो ठीक-ठीक फैसला करने वाला वाक्फिकार है

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ ۚ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(ऐ रसूल तुम कह दो कि जिनको तुम ने खुदा का शरीक बनाकर) खुदा के साथ मिलाया है ज़रा उन्हें मुझे भी तो दिखा दो हरगिज़ (कोई शरीक नहीं) बल्कि खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً ۚ لِلنَّاسِ بَشِيرًا ۚ وَنَذِيرًا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) हमने तुमको तमाम (दुनिया के) लोगों के लिए (नेकों को बेहशत की) खुशखबरी देने वाला और (बन्दों को अज़ाब से) डराने वाला (पैग़म्बर) बनाकर भेजा मगर बहुतेरे लोग (इतना भी) नहीं जानते

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और (उलटे) कहते हैं कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (आखिर) ये क़यामत का वायदा कब पूरा होगा

قُلْ لَّكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ ۚ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً ۚ وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि तुम लोगों के वास्ते एक खास दिन की मीयाद मुक़र्रर है कि न तुम उससे एक घड़ी पीछे रह सकते हो और न आगे ही बढ़ सकते हो

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ

الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ

أَسْتُضْعِفُوا ۚ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۚ لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ

और जो लोग काफिर हों बैठे कहते हैं कि हम तो न इस कुरान पर हरगिज़ ईमान लाएँगे और न उस (किताब) पर जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी और (ऐ रसूल तुमको बहुत ताज्जुब हो) अगर तुम देखो कि जब ये ज़ालिम क़यामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जायेंगे (और) उनमें का एक दूसरे की तरफ (अपनी) बात को फेरता होगा कि कमज़ोर अदना (दरजे के) लोग बड़े (सरकश) लोगों से कहते होंगे कि अगर तुम (हमें) न (बहकाए) होते तो हम ज़रूर ईमानवाले होते (इस मुसीबत में न पड़ते)

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا ۚ أَنْحَنُ صَدَدُنْكُمْ عَنْ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ
جَاءَكُمْ ۚ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ

तो सरकश लोग कमजोरों से (मुखातिब होकर) कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (खुदा की तरफ से) हिदायत आयी तो थी तो क्या उसके आने के बाद हमने तुमको (जबरदस्ती अम्ल करने से) रोका था (हरगिज़ नहीं) बल्कि तुम तो खुद मुजरिम थे

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا ۖ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۚ بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ
نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ ۖ أَنْدَادًا ۚ ۚ وَأَسْرُوا ۚ النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوْا ۚ الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا
الْأَغْلَلَ فِي ۖ أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे (कि ज़बरदस्ती तो नहीं की मगर हम खुद भी गुमराह नहीं हुए) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की फरेबदेही ने (गुमराह किया कि) तुम लोग हमको खुदा न मानने और उसका शरीक ठहराने का बराबर हुक्म देते रहे (तो हम क्या करते) और जब ये लोग अज़ाब को (अपनी आँखों से) देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछुताएँगे और जो लोग काफिर हो बैठे हम उनकी गर्दनो में तौक़ डाल देंगे जो कारस्तानियां ये लोग (दुनिया में) करते थे उसी के मुवाफ़िक़ तो सज़ा दी जाएगी

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ ۚ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ ۚ كُفْرُونَ

और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के लोग ये ज़रूर बोल उठेंगे कि जो एहकाम देकर तुम भेजे गए हो हम उनको नहीं मानते

وَقَالُوا ۚ نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا ۚ وَأَوْلَدًا ۚ ۚ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ

और ये भी कहने लगे कि हम तो (ईमानदारों से) माल और औलाद में कहीं ज्यादा हैं और हम पर आखेरत में (अज़ाब) भी नहीं किया जाएगा

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الْوَعْدِ بِمَا عَمِلُوا ۖ وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ ءَامِنُونَ

और (याद रखो) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद की ये हस्ती नहीं कि तुम को हमारी बारगाह में मुक़र्रिब बना दें मगर (हाँ) जिसने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए उन लोगों के लिए तो उनकी कारगुज़ारियों की दोहरी जज़ा है और वह लोग (बेहशत के) झरोखों में इत्मेनान से रहेंगे

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي ءَايَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ

और जो लोग हमारी आयतों (की तोड़) में मुक़ाबले की नीयत से दौड़ दूप करते हैं वही लोग (जहन्नुम के) अज़ाब में झोक दिए जाएँगे

قُلْ إِنْ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और जो कुछ भी तुम लोग (उसकी राह में) खर्च करते हो वह उसका ऐवज देगा और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देनेवाला है

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۖ ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ أَهْؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ

और (वह दिन याद करो) जिस दिन सब लोगों को इकट्ठा करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी परसतिश करते थे फरिश्ते अर्ज़ करेंगे (बारे इलाहा) तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है

قَالُوا ۖ سُبْحَنكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا ۖ يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ

तू ही हमारा मालिक है न ये लोग (ये लोग हमारी नहीं) बल्कि जिन्नात (खबाएस भूत-परेत) की परसतिश करते थे कि उनमें के अक्सर लोग उन्हीं पर ईमान रखते थे

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ نَّفْعًا ۖ وَلَا ضَرًّا ۚ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۙ ذُوقُوا ۙ عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ

तब (खुदा फरमाएगा) आज तो तुममें से कोई न दूसरे के फायदे ही पहुँचाने का इस्तेयार रखता है और न ज़रर का और हम सरकारों से कहेंगे कि (आज) उस अज़ाब के मज़े चखो जिसे तुम (दुनिया में) झुठलाया करते थे

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ قَالُوا ۙ مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ ۙ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَاؤُكُمْ وَقَالُوا ۙ مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ ۙ مُّفْتَرٍ ۙ ۝۱ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۙ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ ۙ مُّبِينٌ ۙ

और जब उनके सामने हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें पढ़ी जाती थीं तो बाहम कहते थे कि ये (रसूल) भी तो बस (हमारा ही जैसा) आदमी है ये चाहता है कि जिन चीज़ों को तुम्हारे बाप-दादा पूजते थे (उनकी परसतिश) से तुम को रोक दें और कहने लगे कि ये (कुरान) तो बस निरा झूठ है और अपने जी का गढ़ा हुआ है और जो लोग काफ़िर हो बैठो जब उनके पास हक़ बात आयी तो उसके बारे में कहने लगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है

وَمَا ءَاتَيْنَاهُمْ مِّنْ كُتُبٍ ۙ يَدْرُسُونَهَا ۙ وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيرٍ ۙ

और (ऐ रसूल) हमने तो उन लोगों को न (आसमानी) किताबें अता की तुम्हें जिन्हें ये लोग पढ़ते और न तुमसे पहले इन लोगों के पास कोई डरानेवाला (पैग़म्बर) भेजा (उस पर भी उन्होंने क़द्र न की)

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا ۙ مِغْشَارَ مَا ءَاتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا ۙ رُسُلِي ۙ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

और जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया था हालाँकि हमने जितना उन लोगों को दिया था ये लोग (अभी) उसके दसवें हिस्सा को (भी) नहीं पहुँचे उस पर उन लोगों न मेरे (पैग़म्बरों को) झुठलाया था तो तुमने देखा कि मेरा (अज़ाब उन पर) कैसा सख्त हुआ

﴿ قُلْ إِنَّمَا أَعْظُمُ بِوَحْدَةٍ ﴾ ﴿ أَنْ تَقُومُوا ﴾ ﴿ لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرْدَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ﴾ ﴿ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ﴾ ﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴾ ﴿ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيَّ عَذَابٌ ﴾ ﴿ شَدِيدٌ ﴾

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तुमसे नसीहत की बस एक बात कहता हूँ (वह) ये (है) कि तुम लोग बाज़ खुदा के वास्ते एक-एक और दो-दो उठ खड़े हो और अच्छी तरह गौर करो तो (देख लोगे कि) तुम्हारे रफीक (मोहम्मद स0) को किसी तरह का जुनून नहीं वह तो बस तुम्हें एक सख्त अज़ाब (क़यामत) के सामने (आने) से डराने वाला है

﴿ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ﴾ ﴿ فَهُوَ لَكُمْ ﴾ ﴿ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ﴾ ﴿ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴾

(ऐ रसूल) तुम (ये भी) कह दो कि (तबलीखे रिसालत की) मैंने तुमसे कुछ उजरत माँगी हो तो वह तुम्हीं को (मुबारक) हो मेरी उजरत तो बस खुदा पर है और वही (तुम्हारे आमाल अफआल) हर चीज़ से खूब वाकिफ है

﴿ قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلمُ الْغُيُوبِ ﴾

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि मेरा बड़ा गैबवाँ परवरदिगार (मेरे दिल में) दीन हक़ को बराबर ऊपर से उतारता है

﴿ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴾

(अब उनसे) कह दो दीने हक़ आ गया और इतना तो भी (समझो की) बातिल (माबूद) शुरू-शुरू कुछ पैदा करता है न (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा कर सकता है

﴿ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ﴾ ﴿ وَإِنْ أَهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحَىٰ إِلَىٰ رَبِّي ﴾ ﴿ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴾

(ऐ रसूल) तुम ये भी कह दो कि अगर मैं गुमराह हो गया हूँ तो अपनी ही जान पर मेरी गुमराही (का वबाल) है और अगर मैं राहे रास्त पर हूँ तो इस "वही" के तुफ़ैल से जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ भेजता है बेशक वह सुनने वाला (और बहुत) क़रीब है

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا ۚ فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا ۚ مِنْ مَّكَانٍ ۚ قَرِيبٍ ۚ

और (ऐ रसूल) काश तुम देखते (तो सख्त ताज्जुब करते) जब ये कुफ्फार (मैदाने हशर में) घबराए-घबराए फिरते होंगे तो भी छुटकारा न होगा

وَقَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِهِ ۚ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَافُشُ مِنْ مَّكَانٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

और आस ही पास से (बाआसानी) गिरफ्तार कर लिए जाएँगे और (उस वक्त बेबसी में) कहेंगे कि अब हम रसूलों पर ईमान लाए और इतनी दूर दराज़ जगह से (ईमान पर) उनका दसतरस (पहुँचना) कहाँ मुमकिन है

وَقَدْ كَفَرُوا ۚ بِهِ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

हालाँकि ये लोग उससे पहले ही जब उनका दसतरस था इन्कार कर चुके और (दुनिया में तमाम उम्र) बे देखे भाले (अटकल के) तके बड़ी-बड़ी दूर से चलाते रहे

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا ۚ فِي شَكٍّ ۚ مُّرِيبٍ ۚ

और अब तो उनके और उनकी तमन्नाओं के दरमियान (उसी तरह) पर्दा डाल दिया गया है जिस तरह उनसे पहले उनके हमरंग लोगों के साथ (यही बरताव) किया जा चुका इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बेचैन करने वाले शक में पड़े हुए थे

Faatir

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكَةِ
رُسُلًا أَوْ ۚ إِلَىٰ أَجْنَحَةٍ ۚ مَّثْنَىٰ وَثُلَّةَ وَرُبْعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ ۚ قَدِيرٌ ۚ

हर तरह की तारीफ खुदा ही के लिए (मख्सूस) है जो सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला फरिश्तों का (अपना) क़ासिद बनाने वाला है जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर होते हैं (मखलूक़ात की) पैदाइश में जो (मुनासिब) चाहता है बढ़ा देता है बेशक खुदा हर चीज़ पर क़ादिर (व तवाना है)

2

مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ؟ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ؟ وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ؟
مِنْ؟ بَعْدِهِ؟ ؟ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

लोगों के वास्ते जब (अपनी) रहमत (के दरवाजे) खोल दे तो कोई उसे जारी नहीं कर सकता और जिस चीज़ को रोक ले उसके बाद उसे कोई रोक नहीं सकता और वही हर चीज़ पर ग़ालिब और दाना व बीना हकीम है

3

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا؟ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ؟ هَلْ مِنْ خَلْقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ؟ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ؟ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ

लोगों खुदा के एहसानात को जो उसने तुम पर किए हैं याद करो क्या खुदा के सिवा कोई और खालिक है जो आसमान और ज़मीन से तुम्हारी रोज़ी पहुँचाता है उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो

4

وَإِنْ يَكْذِبُواكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ؟ مِّن قَبْلِكَ ؟ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

और (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो (कुढ़ो नहीं) तुमसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर (लोगों के हाथों) झुठलाए जा चुके हैं और (आखिर) कुल उमूर की रूजू तो खुदा ही की तरफ है

5

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ؟ ؟ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ؟ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ
الْغُرُورُ

लोगों खुदा का (क़यामत का) वायदा यकीनी बिल्कुल सच्चा है तो (कहीं) तुम्हें दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी फ़रेब में न लाए (ऐसा न हो कि शैतान) तुम्हें खुदा के बारे में धोखा दे

6

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ؟ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ؟ إِنَّمَا يَدْعُوا؟ حِزْبَهُ؟ لِيَكُونُوا؟ مِنْ
أَصْحَابِ السَّعِيرِ

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे अपना दुश्मन बनाए रहो वह तो अपने गिरोह को बस इसलिए बुलाता है कि वह लोग (सब के सब) जहन्नुमी बन जाएँ

7

الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ

जिन लोगों ने (दुनिया में) कुफ़्र इख़तेयार किया उनके लिए (आख़ेरत में) सख्त अज़ाब है और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) मग़फ़ेरत और निहायत अच्छा बदला (बेहशत) है

8

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ ۖ فَرَءَاهُ حَسَنًا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ

तो भला वह शख्स जिसे उस का बुरा काम शैतानी (अग़वाँ से) अच्छा कर दिखाया गया है औ वह उसे अच्छा समझने लगा है (कभी मोमिन नेकोकार के बराबर हो सकता है हरगिज़ नहीं) तो यक़ीनी (बात) ये है कि खुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है राहे रास्त पर आने (की तौफ़ीक़) देता है तो (ऐ रसूल कहीं) उन (बदबख्तों) पर अफ़सोस कर करके तुम्हारे दम न निकल जाए जो कुछ ये लोग करते हैं खुदा उससे खूब वाकिफ़ है

9

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا ۚ فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ ۚ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ النُّشُورُ

और खुदा ही वह (कादिर व तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो हवाएँ बादलों को उड़ाए-उड़ाए फिरती है फिर हम उस बादल को मुर्दा (उफ़तादा) शहर की तरफ़ हका देते हैं फिर हम उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मर जाने के बाद शादाब कर देते हैं यूँ ही (मुर्दों को क़यामत में जी उठना होगा)

10

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَكْرُ أُو۟لَٰئِكَ هُوَ يُبَوَّرُ

जो शख्स इज्ज़त का ख्वाहँ हो तो खुदा से माँगे क्योंकि सारी इज्ज़त खुदा ही की है उसकी बारगाह तक अच्छी बातें (बुलन्द होकर) पहुँचती हैं और अच्छे काम को वह खुद बुलन्द फरमाता है और जो लोग (तुम्हारे खिलाफ़) बुरी-बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनके लिए क़यामत में सख्त अज़ाब है और (आख़िर) उन लोगों की तदबीर मटियामेट हो जाएगी

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ۚ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أَنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمِّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ ۚ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرِهِ ۚ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ

और खुदा ही ने तुम लोगों को (पहले पहल) मिट्टी से पैदा किया फिर नतफ़े से फिर तुमको जोड़ा (नर मादा) बनाया और बग़ैर उसके इल्म (इजाज़त) के न कोई औरत हमेला होती है और न जनती है और न किसी शख्स की उम्र में ज्यादाती होती है और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर वह किताब (लौहे महफूज़) में (ज़रूर) है बेशक ये बात खुदा पर बहुत ही आसान है

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَذَا عَذْبٌ ۚ فُرَاتٌ ۚ سَائِغٌ ۚ شَرَابُهُ ۚ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا ۚ وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً ۚ تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاحِرَ لَتَبْتَغُوا ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

(उसकी कुदरत देखो) दो समन्दर बावजूद मिल जाने के यकसाँ नहीं हो जाते ये (एक तो) मीठा खुश ज़ाएक़ा कि उसका पीना सुवारत (खुशगवार) है और ये (दूसरा) खारी कड़ुवा है और (इस इखतेलाफ़ पर भी) तुम लोग दोनों से (मछली का) तरो ताज़ा गोश्त (यकसाँ) खाते हो और (अपने लिए ज़ेवरात (मोती वग़ैरह) निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियाँ दरिया में (पानी को) फाड़ती चली जाती हैं ताकि उसके फज़ल (व करम तिजारत) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ

वही रात को (बढ़ा के) दिन में दाख़िल करता है (तो रात बढ़ जाती है) और वही दिन को (बढ़ा के) रात में दाख़िल करता है (तो दिन बढ़ जाता है और) उसी ने सूरज और चाँद को अपना मुतीइ बना रखा है कि हर एक अपने (अपने) मुअय्यन (तय) वक्त पर चला करता है वही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है उसी की सलतनत है और उसे छोड़कर जिन माबूदों को तुम पुकारते हो वह छुवारों की गुठली की झिल्ली के बराबर भी तो इखतेयार नहीं रखते

14

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا ۖ دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا ۖ مَا اسْتَجَابُوا ۖ لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۖ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ۖ

अगर तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार को सुनते नहीं अगर (बिफ़रजे मुहाल) सुनों भी तो तुम्हारी दुआएँ नहीं कुबूल कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इन्कार कर बैठेंगे और वाक़िफ़कार (शख्स की तरह कोई दूसरा उनकी पूरी हालत) तुम्हें बता नहीं सकता

15

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۖ

लोगों तुम सब के सब खुदा के (हर वक्त) मोहताज हो और (सिर्फ) खुदा ही (सबसे) बेपरवा सज़ावारे हम्द (व सना) है

16

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ ۖ جَدِيدٍ ۖ

अगर वह चाहे तो तुम लोगों को (अदम के पर्दे में) ले जाए और एक नयी ख़िलक़त ला बसाए

17

وَمَا ذُلكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۖ

और ये कुछ खुदा के वास्ते दुशवार नहीं

18

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ ۖ وَزِرَ أُخْرَى ۖ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ ۖ وَلَوْ
كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا ۖ الصَّلَاةَ ۖ وَمَنْ
تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۖ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ

और याद रहे कि कोई शख्स किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा और अगर कोई (अपने गुनाहों का) भारी बोझ उठाने वाला अपना बोझ उठाने के वास्ते (किसी को) बुलाएगा तो उसके बारे में से कुछ भी उठाया न जाएगा अगरचे (कोई किसी का) कराबतदार ही (क्यों न) हो (ऐ रसूल) तुम तो बस उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे भाले अपने परवरदिगार का खौफ रखते हैं और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और (याद रखो कि) जो शख्स पाक साफ रहता है वह अपने ही फ़ायदे के वास्ते पाक साफ रहता है और (आखिरकार सबको हिरफिर के) खुदा ही की तरफ जाना है

19

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ

और अन्धा (क्राफिर) और आँखों वाला (मोमिन किसी तरह) बराबर नहीं हो सकते

20

وَلَا الظُّلُمْتُ وَلَا النُّورُ

और न अंधेरा (कुफ़र) और उजाला (ईमान) बराबर है

21

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ

और न छाँव (बेहिश्त) और धूप (दोज़ख़ बराबर है)

22

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ

और न ज़िन्दे (मोमिनीन) और न मुर्दे (काफिर) बराबर हो सकते हैं और खुदा जिसे चाहता है अच्छी तरह सुना (समझा) देता है और (ऐ रसूल) जो (कुफ़ार मुर्दों की तरह) क़ब्रों में हैं उन्हें तुम अपनी (बातें) नहीं समझा सकते हो

23

إِنَّ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ

तुम तो बस (एक खुदा से) डराने वाले हो

24

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا ۖ وَنَذِيرًا ۖ وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ

हम ही ने तुमको यकीनन कुरान के साथ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला (पैग़म्बर) बनाकर भेजा और कोई उम्मत (दुनिया में)

25

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ

ऐसी नहीं गुज़री कि उसके पास (हमारा) डराने वाला पैग़म्बर न आया हो और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो कुछ परवाह नहीं करो क्योंकि इनके अगलों ने भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया है (हालाँकि) उनके पास उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिजे और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

फिर हमने उन लोगों को जो काफ़िर हो बैठे ले डाला तो (तुमने देखाकि) मेरा अज़ाब (उन पर) कैसा (सख्त हुआ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ
وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ ۚ وَحُمْرٌ ۚ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۚ

अब क्या तुमने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि यक़ीनन खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम (खुदा) ने उसके ज़रिए से तरह-तरह की रंगतों के फल पैदा किए और पहाड़ों में क़तआत (टुकड़े रास्ते) हैं जिनके रंग मुख़तलिफ़ है कुछ तो सफ़ेद (बुराक़) और कुछ लाल (लाल) और कुछ बिल्कुल काले सियाह

وَمِنَ النَّاسِ وَالْدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَنُهُ ۚ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ
الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ

और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की भी रंगते तरह-तरह की हैं उसके बन्दों में खुदा का ख़ौफ़ करने वाले तो बस उलेमा हैं बेशक़ खुदा (सबसे) ग़ालिब और बख़्शने वाला है

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا ۖ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً ۚ يَرْجُونَ تَجَرَّةً ۚ لَّنْ تَبُورَ

बेशक़ जो लोग आ़ुदा की किताब पढ़ा करते हैं और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छिपा के और दिखा के (खुदा की राह में) देते हैं वह यक़ीनन ऐसे व्यापार का आसरा रखते हैं

لِيُؤْفِقَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۚ

जिसका कभी टाट न उलटेगा ताकि खुदा उन्हें उनकी मज़दूरियाँ भरपूर अता करे बल्कि अपने फ़ज़ल (व क़रम) से उसे कुछ और बढ़ा देगा बेशक़ वह बड़ा बख़्शने वाला है (और) बड़ा क़द्रदान है

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ ۚ بَصِيرٌ ۚ

और हमने जो किताब तुम्हारे पास "वही" के ज़रिए से भेजी वह बिल्कुल ठीक है और जो (किताबें इससे पहले की) उसके सामने (मौजूद) हैं उनकी तसदीक भी करती हैं - बेशक खुदा अपने बन्दों (के हालात) से खूब वाकिफ है (और) देख रहा है

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرِ ۖ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ

फिर हमने अपने बन्दगान में से खास उनको कुरान का वारिस बनाया जिन्हें (अहल समझकर) मुन्तखिब किया क्योंकि बन्दों में से कुछ तो (नाफरमानी करके) अपनी जान पर सितम ढाते हैं और कुछ उनमें से (नेकी बदी के) दरमियान हैं और उनमें से कुछ लोग खुदा के इखतेयार से नेकों में (औरों से) गोया सबकत ले गए हैं (इन्तेखाब व सबकत) तो खुदा का बड़ा फज़ल है

جَنَّتُ عَدْنٍ ۖ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ ۚ وَلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۚ

(और उसका सिला बेहिश्त के) सदा बहार बागात हैं जिनमें ये लोग दाखिल होंगे और उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनकी (मामूली) पोशाक खालिस रेशमी होगी

وَقَالُوا ۖ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ ۚ شَكُورٌ

और ये लोग (खुशी के लहजे में) कहेंगे खुदा का शुक्र जिसने हम से (हर किस्म का) रंज व ग़म दूर कर दिया बेशक हमारा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला (और) क़दरदान है

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ ۚ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۚ

जिसने हमको अपने फज़ल (व करम) से हमेशगी के घर (बेहिश्त) में उतारा (मेहमान किया) जहाँ हमें कोई तकलीफ छुयेगी भी तो नहीं और न कोई थकान ही पहुँचेगी

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا ۚ وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۚ

और जो लोग काफिर हो बैठे उनके लिए जहन्नुम की आग है न उनकी कज़ा ही आएगी कि वह मर जाए और तकलीफ से नजात मिले और न उनसे उनके अज़ाब ही में तख्फीफ की जाएगी हम हर नाशुक्के की सज़ा यूँ ही किया करते हैं

وَهُمْ يَصْطَرِّخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۚ فَذُوقُوا ۚ فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ

और ये लोग दोजख में (पड़े) चिल्लाया करेंगे कि परवरदिगार अब हमको (यहाँ से) निकाल दे तो जो कुछ हम करते थे उसे छोड़कर नेक काम करेंगे (तो खुदा जवाब देगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्रें न दी थी कि जिनमें जिसको जो कुछ सोंचना समझना (मंज़ूर) हो खूब सोच समझ ले और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारा) डराने वाला (पैग़म्बर) भी पहुँच गया था तो (अपने किए का मज़ा) चखो क्योंकि सरकश लोगों का कोई मद्दगार नहीं

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ ۚ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

बेशक खुदा सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों से खूब वाक्फि है वह यक्कीनी दिलों के पोशीदा राज़ से बाख़बर है

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلْقًا فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۚ

वह वही खुदा है जिसने रूए ज़मीन में तुम लोगों को (अगलों का) जानशीन बनाया फिर जो शख्स काफ़िर होगा तो उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके परवरदिगार की बारगाह में ग़ज़ब के सिवा कुछ बढ़ाएगा नहीं और कुफ़्रार को उनका कुफ़्र घाटे के सिवा कुछ नफ़ा न देगा

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا؟ [1] مِنَ الْأَرْضِ
أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ؟ [2] فِي السَّمَوَاتِ أَمْ آتَيْنَهُمْ كِتَابًا؟ [3] فَهُمْ عَلَى بَيِّنَةٍ [4] مِنْهُ [5] بَلْ إِنْ يَعْذُ
الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) पूछो तो कि खुदा के सिवा अपने जिन शरीकों की तुम क़यादत करते थे क्या तुमने उन्हें (कुछ) देखा भी मुझे भी ज़रा दिखाओ तो कि उन्होंने ज़मीन (की चीज़ों) से कौन सी चीज़ पैदा की या आसमानों में कुछ उनका आधा साझा है या हमने खुद उन्हें कोई किताब दी है कि वह उसकी दलील रखते हैं (ये सब तो कुछ नहीं) बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से (धोखे और) फरेब ही का वायदा करते हैं

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا [1] وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أُمْسَكَهُمَا مِنْ
أَحَدٍ [2] مَنْ [3] بَعْدِهِ [4] إِنَّهُ [5] كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا [6]

बेशक खुदा ही सारे आसमान और ज़मीन अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर (फर्ज़ करे कि) ये अपनी जगह से हट जाए तो फिर तो उसके सिवा उन्हें कोई रोक नहीं सकता बेशक वह बड़ा बुर्दबर (और) बड़ा बख़्शने वाला है

وَأَقْسَمُوا [1] بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَنِهِمْ لَنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ [2] لِيَكُونُنَّ أَهْدَى مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ [3]
فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ [4] مَا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا

और ये लोग तो खुदा की बड़ी-बड़ी सख्त क़समें खा (कर कहते) थे कि बेशक अगर उनके पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) आएगा तो वह ज़रूर हर एक उम्मत से ज्यादा रूबसह होंगे फिर जब उनके पास डराने वाला (रसूल) आ पहुँचा तो (उन लोगों को) रूए ज़मीन में सरकशी और बुरी-बुरी तद्वीरें करने की वजह से

أَسْتَكْبَارًا [1] فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ [2] وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ [3] فَهَلْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ [4] فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا [5] وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ
تَحْوِيلًا

(उसके आने से) उनकी नफरत को तरक्की ही होती गयी और बुदी तद्वीर (की बुराई) तो बुरी तद्वीर करने वाले ही पर पड़ती है तो (हो न हो) ये लोग बस अगले ही लोगों के बरताव के मुन्तज़िर हैं तो (बेहतर) तुम खुदा के दसतूर में कभी तब्दीली न पाओगे और खुदा की आदत में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे

أَوَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا ۚ
 أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ ۚ مِن شَيْءٍ ۚ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي
 الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ عَلِيمًا ۚ قَدِيرًا ۚ

तो क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनके पहले थे और उनसे ज़ोर व कूवत में भी कहीं बढ-चढ के थे फिर उनका (नाफ़रमानी की वजह से) क्या (ख़राब) अन्जाम हुआ और खुदा ऐसा (गया गुज़रा) नहीं है कि उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके (न इतने) आसमानों में और न ज़मीन में बेशक वह बड़ा ख़बरदार (और) बड़ी (क्राबू) कुदरत वाला है

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا ۚ مَا تَرَكَ عَلَى ظَهَرِهَا مِن دَابَّةٍ ۚ وَلَكِن يُؤَخِّرُهُمْ
 إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ مُّسَمًّى ۚ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ ۚ بَصِيرًا ۚ

और अगर (कहीं) खुदा लोगों की करतूतों की गिरफ्त करता तो (जैसी उनकी करनी है) रूए ज़मीन पर किसी जानवर को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़र्रर मियाद तक लोगों को मोहलत देता है (कि जो करना हो कर लो) फिर जब उनका (वह) वक्त आ जाएगा तो खुदा यक़ीनी तौर पर अपने बन्दों (के हाल) को देख रहा है (जो जैसा करेगा वैसा पाएगा)

Yaseen

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَسَ

यासीन

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ

इस पुरअज़ हिकमत कुरान की क़सम

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

(ऐ रसूल) तुम बिलाशक यक़ीनी पैग़म्बरों में से हो

4

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

(और दीन के बिल्कुल) सीधे रास्ते पर (साबित कदम) हो

5

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

जो बड़े मेहरबान (और) गालिब (खुदा) का नाज़िल किया हुआ (है)

6

لِتُنْذِرَ قَوْمًا ۝ مَا أُنْذِرَ ءَابَاؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُونَ

ताकि तुम उन लोगों को (अज़ाबे खुदा से) डराओ जिनके बाप दादा (तुमसे पहले किसी पैगम्बर से) डराए नहीं गए

7

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

तो वह दीन से बिल्कुल बेखबर हैं उन में अक्सर तो (अज़ाब की) बातें यकीनन बिल्कुल ठीक पूरी उतरे ये लोग तो ईमान लाएँगे नहीं

8

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا ۝ فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ

हमने उनकी गर्दनो में (भारी-भारी लोहे के) तौक डाल दिए हैं और टुड़डियों तक पहुँचे हुए हैं कि वह गर्दन उठाए हुए हैं (सर झुका नहीं सकते)

9

وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا ۝ وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا ۝ فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से उनको ढाँक दिया है तो वह कुछ देख नहीं सकते

10

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

और (ऐ रसूल) उनके लिए बराबर है स्वाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ ये (कभी) ईमान लाने वाले नहीं हैं

11

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ ۖ وَأَجْرٍ ۖ
كَرِيمٍ

तुम तो बस उसी शख्स को डरा सकते हो जो नसीहत माने और बेदेखे भाले खुदा का खौफ़ रखे तो तुम उसको (गुनाहों की) माफी और एक बाइज्जत (व आबरू) अज्र की खुशखबरी दे दो

12

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا ۖ وَءَاثَرَهُمْ ۖ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ ۖ مُّبِينٍ ۖ

हम ही यक़ीनन मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और जो कुछ लोग पहले कर चुके हैं (उनको) और उनकी (अच्छी या बुरी बाक़ी माँदा) निशानियों को लिखते जाते हैं और हमने हर चीज़ का एक सरीह व रौशन पेशवा में घेर दिया है

13

وَأَضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम (इनसे) मिसाल के तौर पर एक गाँव (अता किया) वालों का क़िस्सा बयान करो जब वहाँ (हमारे) पैग़म्बर आए

14

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ ۖ فَقَالُوا ۖ إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ

इस तरह कि जब हमने उनके पास दो (पैग़म्बर योहना और यूनस) भेजे तो उन लोगों ने दोनों को झुठलाया जब हमने एक तीसरे (पैग़म्बर शमऊन) से (उन दोनों को) मद्द दी तो इन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास खुदा के भेजे हुए (आए) हैं

15

قَالُوا ۖ مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ ۖ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ

वह लोग कहने लगे कि तुम लोग भी तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो और खुदा ने कुछ नाज़िल (वाज़िल) नहीं किया है तुम सब के सब बस बिल्कुल झूठे हो

16

قَالُوا ۖ رَبُّنَا يَعْلَمُ ۖ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ

तब उन पैग़म्बरों ने कहा हमारा परवरदिगार जानता है कि हम यक़ीनन उसी के भेजे हुए (आए) हैं और (तुम मानो या न मानो)

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلُّ الْمُبِينُ

हम पर तो बस खुल्लम खुल्ला एहकामे खुदा का पहुँचा देना फर्ज है

قَالُوا ۖ إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا ۖ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ

वह बोले हमने तुम लोगों को बहुत नहस क़दम पाया कि (तुम्हारे आते ही कहत में मुबतेला हुए) तो अगर तुम (अपनी बातों से) बाज़ न आओगे तो हम लोग तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुमको यक़ीनी हमारा दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा

قَالُوا ۖ طَائِرُكُم مَّعَكُمْ ۖ أَئِن ذُكِّرْتُم ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ

पैगम्बरों ने कहा कि तुम्हारी बद शुगूनी (तुम्हारी करनी से) तुम्हारे साथ है क्या जब नसीहत की जाती है (तो तुम उसे बदफ़ाली कहते हो नहीं) बल्कि तुम खुद (अपनी) हद से बढ़ गए हो

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ ۖ يَسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا ۖ الْمُرْسَلِينَ

और (इतने में) शहर के उस सिरे से एक शख्स (हबीब नज्जार) दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम (इन) पैगम्बरों का कहना मानो

اتَّبِعُوا ۖ مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا ۖ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ

ऐसे लोगों का (ज़रूर) कहना मानो जो तुमसे (तबलीख़े रिसालत की) कुछ मज़दूरी नहीं माँगते और वह लोग हिदायत याफ़ता भी हैं

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और मुझे क्या (ख़व्त) हुआ है कि जिसने मुझे पैदा किया है उसकी इबादत न करूँ हालाँकि तुम सब के बस (आखिर) उसी की तरफ लौटकर जाओगे

23

ءَاتَخِذْ مِنْ دُونِهِ ۚ ءَالِهَةٌ إِنْ يُرَدَّنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ ۚ لَا تُغْنِي عَنِّي شَفَعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ

क्या मैं उसे छोड़कर दूसरों को माबूद बना लूँ अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफारिश ही मेरे कुछ काम आएगी और न ये लोग मुझे (इस मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगे

24

إِنِّي إِذًا ۚ إِنِّي لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

(अगर ऐसा करूँ) तो उस वक्त मैं यक्रीनी सरीही गुमराही में हूँ

25

إِنِّي ءَامَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ

मैं तो तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान ला चुका हूँ मेरी बात सुनो और मानो ; मगर उन लोगों ने उसे संगसार कर डाला

26

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۚ قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ

तब उसे खुदा का हुक्म हुआ कि बेहिश्त में जा (उस वक्त भी उसको क़ौम का ख्याल आया तो कहा)

27

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ

मेरे परवरदिगार ने जो मुझे बख्श दिया और मुझे बुर्जुग लोगों में शामिल कर दिया काश इसको मेरी क़ौम के लोग जान लेते और ईमान लाते